वर्तमान में सांस्कृतिक पतन का दौर

बच्चों को चित्रकला में प्रशिक्षित करने के लिए नेहरू, गांधी, अन्य राष्ट्रीय नेताओं, दुनिया भर के संत-महात्माओं, प्राकृतिक दृश्यों का सहारा लिया जाता था। इस दौरान बच्चों का जहां देश-विदेश की प्रमुख हस्तियों से परिचय भी प्राप्त हो जाता था, वहीं वे इनके चित्र बना पाने में भी समर्थ हो जाते थे। पर अब प्राइवेट स्कूलों में अमिताभ बच्चन, ऐश्वर्या राय, करीना कपूर, और क्या छोटी-क्या बड़ी अभिनेत्रियों ने लिबास बदलने में अपना जलवा बरकरार रखा है, को कॉपियों के कवर पर छापा जा रहा है। देशी अभिनेत्रियां और मॉडल जहां एक सीमा तक आगे बढ़ने से और ज्यादा आगे नहीं बढ़ना चाहतीं, विदेशी नायिकायें बड़े ही शौक से ऐसे फ़िल्मों को सहजता के साथ कर लेती हैं। यह है बॉलीवुड का जलवा जो बढ़ता ही जा रहा है। आजकल की लगभग सभी हीरोइनें पर्दे पर बिकनी पहन कर आती हैं सिर्फ अपवादस्वरूप उन दृश्यों को छोड़ कर जो फ़िल्म की कथावस्तु से पूरी तरह मेल खाती हैं। यहां तो पहले स्थिति यह थी कि औरतों की भूमिका भी मर्दों को ही निभानी पड़ती थी। निश्चय ही वह अभिनय कला का स्वर्णयुग रहा होगा, क्योंकि समझा जा सकता है कि किसी मर्द के लिए औरत की भूमिका निभा पाना और वह भी चरित्र को पूरी तरह आत्मसात करके, कितना कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य रहा होगा।

नाटक कंपनियों में काम करने वाले पुरुष अभिनेताओं द्वारा औरतों की भाव-छवि और दशा को उजागर करने वाला काम कितना कठिन रहा होगा, इसे आसानी से समझा जा सकता है। शुरुआत में राजपरिवारों से जुड़ी नृत्यांगनाओं ने इस क्षेत्र में कदम रखा। इसके बाद बालिकाओं का फ़िल्मों में प्रवेश शुरू हुआ तो उन्होंने अपनी कला के जबरदस्त जौहर दिखाये। बहरहाल, इस संबंध में और हिंदी फ़िल्म के इतिहास के संबंध में हम हमेशा चर्चा जारी रखने का प्रयास करेंगे। यहां हम अपसंस्कृति का जो भीषण और भयानक प्रसार हो रहा है, उसके बारे में लिखना चाहते हैं। गत पंद्रह वर्षों के दौरान हिंदी सिनेमा में इतनी अश्लीलता बढ़ गई हैं कि बच्चे उससे बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। जैसे ही सिनेमा का कोई बहुचर्चित सेक्सी बोल्ड सीन आने वाला होता है, बच्चे इधर-उधर हो जाते हैं और दूसरा सीन शुरू होने पर वापस अपनी जगहों पर बैठ जाते हैं। क्या यह अटपटा नहीं लगता?

शुरू-शरू में तो लगता है, पर जब सारे मसाले टीवी पर धड़ल्ले से दिखाई जाने लगते हैं तो लोग़ भी क्या करें। फ़िल्म देखने अथवा दिखलवा देने की व्यवस्था तो करवानी ही है। जो थोड़े ख़ुशहाल मध्यवर्गीय परिवार हैं, उनके पास अब आपको आसानी से लैपटॉप मिल जायेगा। इस यंत्र के माध्यम से खाते-पीते हुये, लेटते हुए, बोर हो गये हों तो कुछ समय के लिए फ़िल्म रोक देने के सिस्टम तक बने हुये हैं। आज मेडिकल और इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा पास करते ही छात्र-छात्रायें सबसे पहले लैपटॉप की मांग करते हैं। इसके माध्यम से जहां वे सूचनाओं की मार्फत ज्ञान के अनंत सागर में गोते लगा सकते हैं, वहीं सेक्स, हिंसा, अप्राकृतिक सेक्स, सत्तर-अस्सी साला बूढ़ियों के साथ सेक्स और 12-13 वर्ष की लड़कियों साथ सेक्स क्यों किया जाता है और उसे फ़िल्म बना कर दिखाया जाता है। वास्तव में यह सब देख कर दर्शकों को क्या मिलता है? पशुओं के साथ, विकृत स्थितियों में सेक्स आदि से कुंठित हो चुके नौनिहाल जब यह सब देखते हैं तो आगे चल कर उनमें तरह-तरह की मनोयौन विकृतियां पैदा होने की संभावना होती है। नौजवान लोग़ ऐसी फ़िल्में देख कर अपना आपा खो बैठते हैं और राह चलती लड़कियों के साथ छेड़खानी के अलावा बलात्कारी मानसिकता से भी ग्रस्त हो जाते हैं। ऐसे लोग़ ज़्यादा ही काम विकृतियों से पीड़ित होते हैं। यह अत्यंत ही आश्चर्य की बात है कि विद्यार्थियों की कापियों और रजिस्टरों पर उपरोक्त किस्म की अनाप-शनाप तस्वीरें छापी जा रही हैं। क्या हमारे देश में और दुनिया में महापुरुषों का अकाल हो गया है। अगर शुरू से ही बच्चे कॉपियों की कवरों पर महान् विभूतियों की तस्वीरें छपी देखते तो अपनी स्वाभाविक जिज्ञासा की प्रवृत्ति के कारण अपने शिक्षकों अथवा माता-पिता से उनके बारे में पूछते। इसका सही जवाब मिलने पर उनमें जागृति तो पैदा होती ही, बचपन सक ही वे महान् विभूतियों के कार्यों से परिचित रहते। तब उनमें भी बड़ा होकर अनुसंधान करने का विचार उभरता। तब वे भी कवि-साहित्यकार बनना चाहते। अन्याय के खिलाफ़ न्याय के लिए जारी संघर्ष में उनकी आस्था बढ़ती। पर अब तो माज़रा ही दूसरा है। फ़िल्मों में डांस करने वाली हीरोइनों की नकल जब 10-12 साल की कोई बच्ची शुरू कर देती है तो यह सब बड़ा घिनौना लगता है। अमेरिका अपने सांस्कृतिक सामग्री का प्रवाह भारत और इस जैसे अनेक ग़रीब मुल्कों में कर रहे हैं जिसका एकमात्र मकसद है - जनता को लूटना। जनता की आंखों पर काली पट्टी बांध कर बचपन और युवा की कीमत पर अपसंस्कृति का प्रसार करने वालों को पूरी छूट दिये हुये हैं। वे जो चाहें दिखायें, जैसे चाहें दिखायें। दिन-रात उनका काम अबाध गति से चल रहा है। इसका संगठित स्तर पर विरोध करना बहुत ही जरूरी है। अगर साम्राज्यवादी-मायावादी संस्कृति का जबरदस्त विरोध नहीं किया जा सकता तो इसका परिणाम आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत ही खतरनाक होगा।

क्या है डेविड हैडली का सच?

डेविड कोलमेन हैडली का नाम पिछले कुछ समय से अख़बारों की सुर्खियां बना रहा। दृश्यमाध्यमों यानी खबरिया चेनलों में भी खासे समय तक हैडली प्रकरण छाया रहा। मीडिया में जो बात बार-बार मुखर हो कर सामने आई, उनमें हैडली का मुंबई हमले का मुख्य सूत्रधार होना व उसका पाकिस्तानी मूल का अमेरिकी होना, रही हैं। हैडली का पाकिस्तानी मूल के होने को स्थापित कर पाकिस्तान विरोध का एक हिस्टीरिया भारतीय जनमानस में पैदा करने की कोशिश समाचार माध्यमों द्वारा लगातार की जाती रही। भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव इस पूरे प्रकरण के दौरान काफ़ी बढ़ गया था।

एक बात जो समाचारों में नदारद थी अथवा कभी-कभार ही बहुत दबे पांव प्रकट हुई, वह थी हैडली के अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसी के साथ संबंधों के बारे में। भारत सरकार द्वारा हैडली को भारत को सौंपे जाने की मांग को अमेरिका द्वारा सिरे से नकार दिया गया। फ़िर भारतीय जांच एजेंसियों के अमेरिका पहुंच कर हैडली से पूछताछ करने के प्रयास को भी अमेरिका द्वारा अनुमति नहीं दी गई। दबे स्वरों में कुछ आशंकायें अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसियों की हैडली के साथ संबंधों पर उठीं। लेकिन बाद में इस बारे में यह कह कर अमेरिका को दोषमुक्त कर दिया गया कि हैडली सीआईए का आदमी था जो बाद में लश्कर से मिल गया। यानी उसने अमेरिका को धोखा दे कर अपनी वफ़ादारी बदल ली थी। अब अमेरिका तथा उसकी जांच एजेंसी को इस झमेले से मुक्त करने के बाद फ़िर हैडली, लश्करे तैयबा व पाकिस्तान पर ही सारे समाचार माध्यम की टीका-टिप्पणियां केंद्रित हो गईं। आख़िर इस पूरे झमेले में अमेरिका की कोई भूमिका है, यह प्रश्न घटाटोप कोलाहल में दब गया।

हैडली प्रकरण पर तमाम एक ही रंग में रंगे प्रचार के बीच अंग्रेज़ी दैनिक 'हिंदुस्तान टाइम्स' के 20 दिसंबर के अंक में संपादकीय निदेशक वीर सिंघवी ने अपने अख़बार में एक संपादकीय लेख छापा जो इस संबंध में सोचने-विचारने की एक नयी दृष्टि देता है तथा इस मामले में तमाम विभ्रमों को स्पष्ट करता है। वीर सिंघवी इस लेख में तमाम ऐसे तथ्य उजागर करते हैं जो समाचार-पत्रों, चैनलों व सरकार द्वारा सामने नहीं लाये गये या फ़िर दबा दिये गये। वीर सिंघवी अपने आकलनों का आधार अमेरिकी मीडिया में हैडली के संबंध में प्रकाशित ख़बरों को बनाते हैं। अमेरिकी समाचार माध्यमों में हैडली के अतीत, उसके अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसियों के साथ संबंधों तथा डेनमार्क के एक कार्टूनिस्ट की हत्या का कथित षडयंत्र रचने के संबंध में उसकी गिरफ़्तारी के पूर्व उसकी गतिविधियों का पूरा लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।

अमेरिकी समाचार पत्रों में हैडली के संबंध में जो जानकारी प्रकाशित की गई है, उसके अनुसार हैडली सर्वप्रथम 1998 में अमेरिका में नशीले पदार्थों की तस्करी के संबंध में गिरफ़्तार किया गया था। उस पर मुकदमा हुआ तथा उसे सजा हुई। लेकिन 11 सितंबर 2001 को ट्विन टावर्स पर हमले के बाद उसे मुक्त कर दिया गया। दरअसल अमेरिका को इस हमले के बाद ऐसे तत्वों की जरूरत थी जो बतौर जासूस आसानी से पाकिस्तान स्थित इस्लामी आतंकी समूहों में घुसपैठ कर सकें। हैडली इस मायने में पाकिस्तानी मूल का होने के चलते अमेरिका के लिए काफ़ी मुफ़ीद बनता था।

डेविड कोलमैन हैडली को यह नाम भी अमेरिकी खुफ़िया एजेंसी- सीआईए-द्वारा दिया गया।

हैडली की 1998 से पूर्व गिरफ़्तारी व सजा से पूर्व नाम दाउद गिलानी था। उसके पिता पाकिस्तानी मूल के व मां अमेरिकी थी। हेडली को यह नाम उसकी मां के उपनाम 'हैडली' के आधार पर दिया गया था। हैडली को ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन विभाग के एजेंट के बतौर पाकिस्तान भेजा गया। इसके बाद हैडली ने दुनिया भर के चक्कर लगाये। कभी भी एयरपोर्ट अथवा आव्रजन विभाग ने उसके बारे में गंभीरता से जांच नहीं की जैसा कि सामान्यतः ड्रग अथवा नशीले पदार्थों के अपराधी के संबंध में आमतौर पर होता है। दरअसल, ड्रग एनफोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन के तहत हैडली की नियुक्ति उसे एक कानूनी आवरण प्रदान करना था।

हैडली ने भारत की कई यात्रायें कीं। उसने मुंबई में ताज होटल का मुआयना किया व नरीमन हाऊस में रह रहे एक यहूदी परिवार से मेलजोल बढ़ाया। अपने को उसने वहां एक अमेरिकी यहूदी बताया। अपने हर क्रियाकलापों की जानकारी उसने अपने अमेरिकी आकाओं को उपलब्ध कराई। यह गौरतलब है कि मुंबई हमलों के दौरान नरीमन हाऊस में रह रहा एक यहूदी परिवार मारा गया था। यह भी गौरतलब है कि सीआईए द्वारा भारत पर समुद्री मार्ग से हमले की पूर्व सूचना संकेत के रूप में दे दी गई थी। लेकिन वह इतनी अस्पष्ट और धुंधली थी कि इसे भारत की खुफ़िया एजेंसियों व सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया। सवाल यह है कि अमेरिका को जब मुंबई हमलों के बारे में सब कुछ पहले से ही पता था तो उसने इसकी स्पष्ट जानकारी भारत को क्यों नहीं दी?

उत्तर अबूझ नहीं है। अगर अमेरिका यह करता तो डेविड हैडली की पहचान आतंकी समूहों के बीच खुल जाती। दूसरे भारत में सैंकड़ों लोग़ आतंकी हमलों में मारे जायें, इससे अमेरिका को क्या फ़र्क पड़ता है। 'आतंक के खिलाफ़' उसकी लड़ाई का मकसद तो इराक, अफ़ग़ानिस्तान पर कब्ज़े के लिये है। दूसरे, भारत को अस्पष्ट संकेत भेजने का मकसद भी मुंबई हमले के बाद भी किसी भी स्थिति में हैडली के पकड़े जाने तथा उसके अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसियों से संबंध जाहिर होने की स्थिति में अपना दामन बचाने की पूर्व निर्धारित कूटनीति का हिस्सा थी।

यहां एक दूसरी संभावना पर विचार करना मुनासिब होगा कि अमेरिका को पाकिस्तानी तालिबान व इस्लामी कट्टरपंथी कार्यवाही न करने को लेकर हमेशा आलोचना झेलनी पड़ी है।

यह भी सच है कि पाकिस्तान की सेना व राजनीतिक गलियारों में तालिबान व इस्लामी कट्टरपंथियों के सहयोगी मौजूद हैं। पाकिस्तान के शासक 'आतंकवाद' के खिलाफ़ अमेरिकी मदद का सही इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं, वे चोरी-छिपे तालिबान को संरक्षण देते रहे हैं, अमेरिकी रणनीतिकारों की यह एक मान्यता रही है और एक हद तक यह सही भी है। विखंडन के स्तर पर पहुंचा पाकिस्तान बड़े स्तर पर तालिबान व इस्लामी कट्टरपंथियों के खिलाफ़ आरपार की लड़ाई का जोखिम उठाने की हिम्मत नहीं रखता, क्योंकि तालिबान और कट्टरपंथियों की जड़ें पाकिस्तान में काफ़ी गहरे जमीं हैं। पाकिस्तान पर सीधा हमला कर इराक व अफ़ग़ानिस्तान की तरह वहां का शासन अपने हाथ में लेने का दुस्साहस अमेरिका नहीं कर सकता, क्योंकि इराक व अफ़ग़ानिस्तान पर कब्ज़ा अमेरिका के लिए कड़वे अनुभव साबित हो रहे हैं।

ऐसे में पाकिस्तान पर दबाव बनाने के लिये भारत को भड़काना अमेरिका की रणनीति हो सकती है। ऐसे समय में जब भारत -पाकिस्तान के बीच मेलजोल बढ़ रहा हो, मुंबई हमलों से कम किसी घटना से भारत-पाकिस्तान के रिश्तों को बिगाड़ना संभव नहीं था। मुंबई हमलों के दौरान नरीमन हाऊस में एक यहूदी परिवार के मारे जाने की घटना ने इजरायल को भी पाकिस्तान के खिलाफ़ आक्रामक मुद्रा में ला दिया था। ऐसे में क्या यह संभव नहीं कि मुंबई हमले की योजना स्वयं हैडली के माध्यम से खुद अमेरिका ने लश्करे तैयबा तक पहुंचाई हो। जो भी हो, तथ्य इसी ओर संकेत करते हैं। अब इस बात पर विचार करें कि क्यों अमेरिका ने हैडली को भारत को नहीं सौंपा? क्यों उसने पूछताछ की भी अनुमति भारतीय जांच एजेंसियों को नहीं दी? इन सवालों को समझने से पूर्व यह स्पष्ट करना उचित होगा कि हैडली की गिरफ़्तारी भी कैसे नाटकीय रूप में हुई?

एक महत्त्वपूर्ण बात जो इस दौरान सामने आई है कि कुछ समय पहले भारतीय एजेंसियों ने एक बंगलादेशी आतंकवादी को गिरफ़्तार किया था जिसके लश्कर से संबंध थे। उसके द्वारा भारतीय ख़ुफ़िया एजेंसियों को यह बात पता चली कि अमेरिकी मूल का एक व्यक्ति भारत में सक्रिय है। भारतीय एजेंसियों ने यह बात अमेरिका को संप्रेषित कर दी। अमेरिका ने इस संबंध में कोई जवाब नहीं दिया। इसके कुछ समय बाद अमेरिका ने डेविड हैडली व उसके सहयोगी तहव्वुर राणा को डेनमार्क के एक कार्टूनिस्ट की हत्या का कथित षड्यंत्र रचने के आरोप में गिरफ़्तार कर लिया। जाहिर है कि अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसियों को हैडली और सीआईए से उसके संबंधों का भांडा फूटने का अंदेशा भारतीय एजेंसियों की सूचना से हो गया था। इससे पहले कि हेडली उन्मुक्त विचरण करते हुए भारत या कहीं और पकड़ा जाये, उन्होंने अमेरिका छोड़ने से पहले उसे गिरफ़्तार कर लिया। भारतीय एजेंसियों को पूछताछ का मौका भी इसी डर से नहीं दिया गया। रही बात हैडली की मुंबई दंगों में भूमिका के संबंध में उसे भारत को सौंपने की तो अमेरिका ने यह बहाना बनाया कि भारत और अमेरिका के बीच प्रत्यर्पण संधि नहीं है। अमेरिका स्वयं तो पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान सहित दुनिया भर से तमाम लोगों को मात्र शक के आधार पर अगवा कर ग्वातेनामों की ख़ूंखार जेल में अमानवीय यातना देने के लिए कुख्यात रहा है। स्वयं मुंबई हमलों के दौरान पहले-पहल आतंकियों को देखने वाली एक महिला को अमेरिकी जांच एजेंसियों द्वारा अगवा कर कुछ समय के लिए अमेरिका ले जाने की खबर भी सामने आई थी। आख़िर यह दुहरा मानदंड क्यों? और इससे भी महत्त्वपूर्ण कि दुनिया के 'सबसे बड़े लोकतंत्र' की सरकार व एक प्रभुतासंपन्न देश की सरकार यह कैसे यह सब बर्दाश्त कर गई? यह हमारी सरकार की अमेरिकापरस्ती की विद्रूप अभिव्यक्ति है।

हैडली की गिरफ़्तारी के बाद अमेरिका में उसे अपना वकील करने की छूट दी गई। उसे सारे कानूनी अधिकार दिये गये। अमेरिकी कानूनों का हवाला देते हुये उसको किसी शारीरिक उत्पीड़न से मुक्त रखा गया। अब सवाल यह है कि राजनीतिक बंदियों और कथित आतंकी संगठनों से जुड़े लोगों के खिलाफ़ अमेरिका का अमानवीय बर्ताव जगजाहिर है, फ़िर हैडली के साथ यह सभ्य व्यवहार क्यों? स्पष्ट है कि हैडली की गिरफ़्तारी व उसका मुकदमा एक सुनियोजित नाटक का हिस्सा है। संभव है हैडली को जेल भी हो जाये, पर जेल उसके लिए आरामगाह साबित होगी। दो-तीन साल जेल में संरक्षित जीवन जीने के बाद हैडली बाहर आएगा तथा फ़िर अमेरिकी ख़ुफ़िया एजेंसी सीआईए के किसी गुप्त मिशन का हिस्सा बन कर किसी और शिकार के लिए निकल जायेगा।

- नगेन्द्र मनराल